एक ओंकार (ੴ) सतिगुरु प्रसादि ॥

इतिहास गुरू खालसा (पंथ) अठाहरवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक

व

स्वन्त्रता का सिक्ख संग्राम

अथवा

सिक्ख इतिहास भाग द्वितीय

www.sikhworld.info
E-mail: info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

क्रांतिकारी जगद्‌गुरु नानक चेरीटेबल

द्वितीय – अंश (९)

लेखकः
जसबीर सिंघ
फोनः 0172 – 21696891
मो. 99881 – 60484

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

कामागाटामारू (समुद्री ज़हाज) का हीरो बाबा गुरदित्ता सिंघ

सिक्ख इतिहास, भाग–दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़
Website : www.sikhworld.info

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विषय–सूची

क्रमसंख्या	शीर्षक	पृष्ठसंख्या
1.	कामागाटामारु (समुद्री ज़हाज) का हीरो बाबा गुरदित्त सिंघ	
2.	7 वर्ष का अज्ञात–वास	
3.	बाबा जी की गिरफ्तारी	
4.	रिहाई और फिर गिरफ्तारी	
5.	और कोई सेवा	

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कामागाटामारु (समुद्री ज़हाज) का हीरो
बाबा गुरदित्त सिंघ

स. मोहन सिंघ

15 नवम्बर, 1921 वाले दिन ननकाना साहिब में सजे दीवान की स्टेज से सैक्रेटरी स० सुन्दर सिंघ लायलपुरी ने किसी व्यक्ति को स्टेज पर आ कर संगत को दर्शन देने के लिए निमंत्रित किया।

बीच के नाटे कद का एक बहुत ही साधारण सा बजुर्ग चादर ओढ़े हुए सारी संगत में से उठने ही लगा था कि पिछे बैठे हुए एक नौजवान सिंघ ने करारा मुक्का उस वृद्ध की पीठ में दे मारा और कहा–

"बैठ जा नीचे, बूढ़े! मुझे भी दर्शन कर लेने दे, देश की आज़ादी की शमा के परवाने के।"

नौजवान नहीं था जानता कि जिसके दर्शनों के लिए उसकी आंखें तरस रही थीं, उसी बजुर्ग की कमर में ही उसने अनभिज्ञता में ही जोर का मुक्का दे मारा था।

मुक्का खा कर बाबा गुरदित्त सिंघ जी संभले और धीरे–धीरे आगे बढ़कर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्मुख सम्मान सहित माथा टेकने के पश्चात् स्टेज पर जा कर सुशोभित हुए। संगत ने ऊँचे स्वर में फतेह बुलाई और बाबा जी ने कोई दो घंटे के लैक्चर में देश की आजादी के लिए किये गऐ पिछले कई वर्षों के संघर्ष से संगत को अवगत करवाया।

बाबा गुरदित्त सिंघ जी का जन्म सरहाली नामक गांव में सरदार हुकम सिंघ जी के घर 1859 ई० में हुआ। 6 वर्ष की आयु में आपने एक संन्यासी बाबा से पंज ग्रन्थी का पाठ करना सीखा । स्कूली शिक्षा बचपन में ही छोड़ दी।

बचपन से ही आप बहुत दलेर थे। एक बार आप रहट पर चढ़कर कुआं चला रहे थे कि पैर फिसलने के कारण कूएं में गिर पड़े। घबराये नहीं बल्कि हिम्मत करके बचाने वालो के पहुंचने से पूर्व ही कूएँ से बाहर निकल आये।

युवावस्था में एक रिश्तेदार के विवाह पर गये तो बारातियों ने एक अड़ियल घोड़ी पर चढ़ने के लिए ललकारा, जो कि कइयों को गिरा चुकी थी। नौजवान गुरदित्त सिंघ बिना काठी डाले घोड़ी पर जा चढ़ा और मीलों तक घोड़ी को भगा–भगा कर ठंडा कर दिया। बाबा जी की इस बहादुरी को देख कर विवाह में आये एक सिंघ ने गुरदित्त सिंघ को अंबाला छावनी में मिल्टरी में भर्ती के लिए बुलवाया पर भर्ती करने वाले अंग्रेज़ अफसर ने नौजवान गुरदित्त सिंघ को कहा–"अभी टुमारी उमर छोटी है, तकड़ा हो कर आना।"

मिल्टरी में दुबारा भर्ती होने का ख्याल छोड़ कर बाबा गुरदित्त सिंघ अपने भाई के पास मलाया जा पहुंचे और चौकीदार की नौकरी करने लग गये। बाद में ऐसा संयोग बना कि ठेकेदारी करने लग गये।

1883 ई० में आपने शादी की, पर इस शादी में से कोई संतान न होने के कारण पहली स्त्री की रजामंदी से दूसरा विवाह कर लिया जिसमें से दो लड़के हुए। पहला लड़का तीन महीने का हो कर मर गया और दूसरा लड़का जब चार वर्ष का हुआ तो बाबा जी की दूसरी पत्नी चल बसी। इस दूसरे बच्चे को पालन–पोषण का काम बाबा गुरदित्त सिंघ जी के जिम्मे ही रहा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम वर्षों में अंग्रेज़ों ने अपना पक्का राज्य स्थापित कर लिया और भारत देश की दौलत की विलायत पहुँचाने में व्यस्त हो गये। पंजाब के परिश्रमी किसान भी अपना पेट भरने से असमर्थ होने लगे। उनके लिए लगान भरना कठिन हो गया। घर की आमदनी से पेट न भरता देख कर, पंजाबी किसान विदेश जाने की तैयारी करने लगे।

जो पंजाबी मलाया, सिंगापुर, ब्रमा आदि स्थानों पर पहुंचे, उनको गोरों ने अपनी कोठियों की पहरेदारी का काम सौंपा। बाद में इन बहादुर पंजाबियों को पुलिस तथा मिलट्री में भर्ती करना आरंभ कर दिया और इनके बलबूते अपनी कालोनियों में उन्होंने अपने अधिकार को और मज़बूत किया।

बंदरगाहों के पास रहने के कारण इन शूरवीर पंजाबियो का मिलाप अमरीका, कैनेडा आदि देशों के आये लोगों से होता रहता । विदेशी अपने मुल्कों की खुशहाली तथा आज़ादी की बातें बहुत गर्व से करते तथा पंजाबी आंखे फाड़–फाड़ कर उनकी ओर देखते। उनकी बातों को सुनते और अपनी बुरी दशा को देख–सुन कर सुन्न हो जाते। वे सोचते, पंजाब से दूर तो आ ही गये हैं फिर क्यों न अमरीका या कैनेडा जा कर हम भी खुशहाली तथा आज़ादी का आनंद लें।

उधर 20 वीं शताब्दी के आरंभ में कैनेडा सरकार देश का नवनिर्माण कर रही थी। जंगल काट–काट कर नयी बस्तियां बनायी जा रही थीं। इस काम के लिए अत्यन्त मज़दूरों की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए चीन, जापान तथा हिंदुस्तान के मजदूर कैनेडा को काफिले डाल रहे थे।

कैनेडा के ठेकेदार भारतीय पंजाबियो को , चीनी तथा जापानी मजदूरों से अधिक उपयोगी समझते थे क्योंकि पंजाबी मज़दूर अपनी शरीरिक डीलडौल व शक्ति के बल पर पेड़ों को काटने की प्रक्रिया को मशीनों से भी सस्ता कर देते थे। विदेशी मज़दूरों की बढ़ोत्तरी तथा कम मज़दूरी पर काम करने के कारण कैनेडियन मज़दूरों को कष्ट होने लगा व उन्होंने भारतीय मज़दूरों के कई जगहों पर घर–बार भी फूँक दिये। भारतीय मज़दूरों ने कैनेडा की सरकार के दरवाज़े खटखटाये पर उनकी फरियादों का सरकार पर कोई खास असर न हुआ, बल्कि उनको ही झाड़ झपट पड़ गयी।

इतना ही नहीं, बल्कि कैनेडा की सरकार ने भारतीय मज़दूरों के कैनेडा में प्रवेश को रोकने के लिए कानूनी सख्ती भी आरम्भ कर दी। कानून की नयी धारा के अनुसार केवल वही विदेशी कैनेडा आ सकते थे जो अपने साथ कैनेडा प्रवेश करते समय 200 डालर नकद लायें। इस कानून की मार से चीनी तथा जापानी मज़दूर तो अपने देशों की सरकार के प्रयासों से बच गये, पर गुलाम भारतीयों के दुःख भला किसने दूर करने थे! इनके लिए कानून की सख्ती बरकरार रही।

कैनेडियन कानून की सख्ती के कारण भारतीयों का कैनेडा में प्रवेश होना लगभग असंभव ही हो गया था। पंजाबी किसान ज़मीने तथा घर–घाट बेच कर मलाया, सिंगापुर जा कर वहाँ से कैनेडा जाने का प्रयास करते, पर असफल होकर सब कुछ गंवा का सिंगापुर, मलाया आदि देशों में ही ठेकेदारों के पास मज़दूरी करने लग जाते ।

जनवरी 1914 का वर्णन है। हांगकांग के गुरुद्वारे में, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म दिवस के अवसर पर लगे दीवान में, मिलट्री का एक भी सिंघ दिखलाई न दिया। गोरा सरकार ने मिलट्री वाले सिंघों को इस गुरुद्वारे में जाने से रोक दिया था । सरकार यह समझती थी कि यह गुरुद्वारा स्वतंत्रता की भावना व जोश रखने वालों का अड्डा बन चुका है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भरे दीवान में बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने कलगियों वाले पिता गुरु गोबिंद सिंघ के कारनामों का वर्णन करते हुए सिंघों को दृढ़ करवाया कि जब तक भारतीय गुलामी की जंजीरे गले में से उतार नहीं फैंकते, तब तक यह कानूनी पाबंदिया भी गर्दन से नहीं उतरने वाली।

दीवान समाप्त हुआ। कैनेडा जाने की इंतजार कर रहे पंजाबियों का झुरमुट बाबा जी के पास आकर लग गया। उन्होंने रो-रो कर अपने दुःखड़े बाबा जी को सुनाते हुए बताया कि किस प्रकार ठग एजेंटों के हाथों चढ़ कर वे बर्बाद हो रहे हैं। उन्होंने बाबा जी के समने अनुरोध किया कि वे उनकी अगवाई करें और निराश्रितों की बांह पकड़ें।

बाबा जी ने उत्तर में कहा कि कैनेडा जाने की एक ही राह है कि कानूनी शर्तो को पूरा किया जाये। यदि यह हो जाये तो कोई शक्ति तुम्हें कैनेडा में प्रवेश करने से नहीं रोक सकता।

दो नौजवान, सरदार दलजीत सिंघ तथा सरदार वीर सिंघ (जो उच्च विद्या प्राप्त करने हेतु अमरीका जा रहे थे) बाबा जी तथा पंजाबियों में हो रहे इस वार्तालाप से इनते प्रभावित हुए कि उन्होंने अमरीका जाने का इरादा ही रद्द कर दिया और बाबा जी के साथ मिल कर कैनेडा में बस रहे पंजाबियो से इस बारे में आवश्यक जानकारी पत्रों द्वारा प्राप्त कर ली।

बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने कलकत्ता जाकर "गुरु नानक स्टीमशिप कम्पनी" के नाम पर इश्तिहार के द्वारा लोगों को सूचित किया कि वह कलकत्ता से सीधे कैनेडा को जहाज ले जा रहे हैं। पर गोरा सरकार की सख्ती तथा विरोधी प्रोपेगंडे के कारण एक भी यात्री इस यात्रा के लिए तैयार न हुआ।

वापिस सिंगापुर आकर बाबा जी ने 24 मार्च, 1914 को कामागाटामारू नामक जहाज़ 6 महीनों के लिए 11,000 डालर प्रति माह किराये पर ले लिया।

500 से अधिक यात्री कैनेडा जाने के लिए हाँगकाँग से ही मिल गये । जहाज़ का नाम "गुरू नानक जहाज" कंपनी बनाने के लिए 80 लाख रुपये के इकरार हो गए । "गुरु नानक नैवीगेशन कंपनी" बना ली गई। गवर्नमैंट पैसेज आफिस से इमीग्रेशन एक्ट के अनुसार हांगकांग से 125 डालर प्रति सवारी देकर 500 टिकट खरीद लिए गए।

गुरु नानक जहाज़ हांगकांग बंदरगाह पर तैयार खड़ा था। रास्ते के लिए आवश्यकता वस्तुयें आटा तेल, चावल, दालें जहाज़ में लादी जा चुकी थीं। डाक्टर रघुनाथ सिंघ जी ने दवाईयों का भी प्रबंध कर लिया था। बस इंतजार थी तो केवल गवर्नर, हाँगहांग से चलने के लिए आज्ञा पत्र मिलने की।

हाँगकांग की गोरा सरकार कुछ और भी षड्यंत्र रच रही थी। 25 मार्च, 1914 को अचानक बाबा गुरदित्त सिंघ जी को गिरफ्तार कर लिया गया । कंपनी के दफ्तर पर कब्जा करके मुसाफिरों में ऐसी भगदड़ मचाई कि सभी बिखर गये। जहाज की रवानगी में विघ्न डालकर, अगले दिन बाबा जी को ज़मानत पर रिहा कर दिया गया और उनके विरुद्ध दर्ज किया गया झूठा मुकद्दमा भी सरकार ने 28. 3.1914 को वापिस ले लिया। सरकार की इस धक्केशाही के कारण 500 में से केवल 13 5 मुसाफिर रह गये और बाकी इधर-उधर हो गए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कुछ दिनो के पश्चात् बाबा जी को अचानाक ही एक्टिंग गवर्नर मिस्टर स्वेर्न से "गुरु नानक जहाज़" को कैनेडा ले जाने की आज्ञा मिल गई।

4 अप्रैल, 1914 को जहाज़ 135 यात्रियों को ही लेकर कैनेडा के लिए चल पड़ा। शिंघाई तथा कोबे के बंदरगाहों से और यात्री मिल गये तथा यह संख्या 360 तक पहुँच गई।

दिनांक 21-5-1914 का शिंघाई, मौजी व याकाहामा बंदरगाहों से होता हुआ यह जहाज़ कैनेडा देश की विक्टोरियां बंदरगाह में जा पहुँचा। पर आगे से उस देश के इमीग्रेशन कार्यालय के अधिकारियों न जहाज़ का बंदरगाह में आने से रोक दिया। बैन्कूर शहर से भाई बलवंत सिंघ जी ग्रन्थी अन्य साथियों सहित भारतीय यात्रियों के स्वागत के लिए विक्टोरिया बंदरगाह पर पहुँचे हुए थे। उन्होंने मोटर किश्ती के द्वारा जहाज़ तक जाने के प्रयत्न किया पर कनेडियन अहलकारों ने मोटर किश्ती को जहाज़ के समीप नहीं जाने दिया तथा वापिस भेज दिया।

जहाज़ के जापान कप्तान के व्यवहार में भी अन्तर आ गया। वह इमीग्रेशन अधिकारियों के सामने कहने लगा कि उससे जहाज़ का रवानगी पत्र गुम हो गया है। पर होनहार नौजवान सरदार दलजीत सिंघ ने कप्तान के कागजों में से तुरंत रवानगी पत्र ढूँढ कर इमीग्रेशन अधिकारियों को दिखला दिया। इसके बावजूद उन अफसरों ने जहाज़ का विक्टोरिया बंदरगाह पर नहीं लगने दिया।

अगले दिन 22-5-1914 को गुरु नानक जहाज़ (कामा गाटामारू जहाज़) विक्टोरिया से चल कर वैन्कूवर बंदरगाह के समीप पहुँचा। जहाज़ को बंदरगाह से एक मील दूर रोक दिया गया और आस-पास गोरा पुलिस का पहरा लगा दिया गया।

कामागाटामारू जहाज़ के कैनेडा आने के बारे में खबरें कैनेडा में बस रहे भारतियों तक अमरीकन अख़बारों के द्वारा पहुंच चुकी थीं। दूर-दूर से भारतीय यात्रियों के सम्बन्धी -रिश्तेदारों मुसाफिरों का स्वागत करने के लिए वैन्कूवर पहुंच गए। पर वह बंदरगाह से दूर खड़े "कामागाटामारू" की लैपों की मध्यम रोशनी ही देख सकते थे। कैनाडा तथा भारत की अंग्रेज़ सरकारों में यह साज़िश पूरी हो चुकी थी कि इस जहाज़ को किनारे पर नहीं लगने देना है, बल्कि यात्रियों सहित वापिस भेज देना हैं।

कैनेडा में दाखिल होने वाले भारतीयों के बारे में कानूनी दशा 24-11-1913 को ब्रिटिश कोलंबिया की हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस मिस्टर हंटर द्वारा (ऐसे एक केस के बारे में) दिये गये फैसले के अनुसार यह था कि- (क) इमीग्रेशन एक्ट की शर्तों को पूरा करके आने वाली भारतीयों को कैनेडा में आने से रोका नहीं जा सकता। (ख) किसी भी व्यक्ति को जहाज़ में कैद नहीं रखा जा सकता और (ग) संदेहास्पद व्यक्तियों को जहाज़ से उतार कर ज़मानत पर छोड़ा जाना चाहिए और जाँच करने के पश्चात् उन पर बाकायदा मुकद्दमा चलाया जाना चाहिए।

भाई बलवंत सिंघ ग्रन्थी जी ने कैनेडियन भारतीयों से धन एकत्र करके कामा-गाटामारू सहायता कमेटी बनायी ताकि भारतीय यात्रियों की कानूनी के अनुसार सहायता की जा सके।

उधर इमीग्रेशन इन्सपेक्टर हापकिन्सन जहाज़ में आया उसने बाबा जी से 2 हजार डालर रिश्वत के मांगे जो उन्होंने देने से इन्कार कर दिया।

कामागाटामारू की किराये की अगली किश्त 4-6-1914 को देनी थी। कामागाटामारू डीफेंस कमेटी के मैंबरों (भाई भाग सिंघ, भाई मित सिंघ, भाई रतन सिंघ, भाई भगवान, सिघ और मिस्टर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रहीम के नाम करवा लिया। इन नये ठेकेदारों द्वारा किश्त अदा कर देने के बावजूद भी इनको जहाज़ का कब्जा न लेने दिया गया, बल्कि इनको बताये बिना ही कैनेडा सरकार ने जहाज़ को वापिस हांगकांग जाने का आदेश दे दिया।

बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने और नये ठेकेदारों ने इमीग्रेशन विभाग को संयुक्त आवेदन दिया पर वह प्रीवी कौंसिल के पास अपील करना चाहते थे – इसलिए (क) फ़ैसला होने तक मुसाफिरों को जहाज़ में से उतरने की आज्ञा दी जाये और (ख) यदि जोर – ज़बरदस्ती से जहाज़ को मुसाफिरों सहित वापिसी भेजना है तो भेजने से पूर्व यात्रियों को, वापिस यात्रा के लिए रसद – पानी तथा यात्रा – व्यय दिया जाये।

इस आवेदन का बाबा जी को कोई उत्तर न मिला। उधर यात्रियों की दशा दयनीय होती गयी। भूखे – प्यासे मुसाफिर खाने – पीने को तरसने लगे। जहाज़ के पुराने ठेकेदारों को रसद पानी का प्रबंध नहीं करने दिया गया। नये ठेकेदारों को जहाज़ों पर पैर रखने की भी आज्ञा न दी गयी। कैनेडा सरकार ज़िद्द पर अड़ी थी कि यात्रियों को इसी प्रकार भूखा – प्यासा वापिस भेजना है।

एक दिन जहाज़ में एक बच्चा (फौजा सिंघ) प्यास से बेहोश हो कर गिर गया। बाबा जी ने कप्तान के कमरे में से बीयर की बोतल निकाल कर बच्चे का मुँह तर किया तो कप्तान बाबा जी से कड़वे वचन बोलने लग गया दूसरे दिन जहाज़ के जापानी मल्लाह, बंदरगाह से पानी के टीन भर कर जहाज़ पर लाये, पर यात्रियों को पानी देने से रोक दिया गया । इस पर यात्रियों की भीड़ की भीड़ पानी पर टूट कर पड़ गयी और उन्होंने पानी पी कर अपने गले तर किये।

इस घटना का समाचार जहाज़ी कप्तान ने इतना बढ़ा – चढ़ा कर जापानी जंगी जहाज़ को दिया कि उन्होंने तार दे कर जापानी जंगी जहाज़ मंगवा लिया, जिसने कामागाटामारू को आकर घेरा डाल दिया।

डीफेंस कमेटी वालों ने घटना की वास्तविकता जब जापानी कौंसलर मिस्टर होसी को जा कर बताया तो वह स्वय जहाज़ में आया और भूखे – प्यासे मुसाफिरों की दशा को देख कर दंग रह गया 27 – 6 – 1914 को कैनेडा सरकार की स्वीकृति द्वारा उसने 103 टन पानी एक सप्ताह के कोटे के रूप में यात्रियों कि लिए जहाज़ पर पहुँचाया पर यात्रियों को इसके पश्चात् 19 – 7 – 1914 तक पानी नहीं दिया गया।

18 – 7 – 1914 को आधी रात को जहाज़ी पहरेदार, मुसाफिरों को एक जंगी जहाज़ कामागाटामारू की ओर बढ़ता हुआ दिखलाई दिया। पहरेदार यात्रियों ने खतरे का अलार्म बजा दिया । सभी यात्री हड़बड़ा का उठ खड़े हुए। उनके देखते देखते ही 'समुद्री शेर' नामक जंगी ज़हाज़ कामा – गाटामारू ज़हाज के समीप पहुँच चुका था और 200 हथियारबंद गोरे कामा – गटामारू पर आक्रमण करने के लिए तैयार खड़े थे। कामागाटामारू के यात्रियों ने डैक पर चढ़ कर गोरों को ललकारा और ऊँची आवाज़ में कहा –

"खबरदार जो हमारे जहाज़ के समीप आये तो.....

हम अपने ज़हाज़ की रक्षा के लिए प्राण दे देंगे।"

गोरों ने इस चुनौती का उत्तर हवाई गोली चला कर दिया।

कामा – गाटामारू के यात्रियों ने कोयले को नीचे डेक पर पहुंचाना आरम्भ कर दिया और बाबा गुरदित्त सिंघ जी को कैबिन में बंद करके चटखनी लगा ली।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यात्रियों के नेताओं ने यात्री की सेना को तीन हिस्सों में बांट दिया दो पार्टियो ने बारी–बारी से शत्रु गोरों पर कोयला की बौछाड़ शुरू कर दी और तीसरी पार्टी नीचे से कोयले उठा–उठा कर डक पर पहुँचाती रही। कोयलों की बरसात का उत्तर गोरों ने गोलियों की बौछाड़ से दिया। ऊँचे डैक पर कोयल,बम के गोलों की तरह जिसको भी लगते, उसे घायल करते जाते।

कुछेक मुसाफिरों ने जंग लगे हथियारों से दोनों जहाज़ों को आपस में बांधे रास्सों को काटने का प्रयत्न किया पर आगे से गोरा पुलिस ने उबलता हुआ पानी मुसाफिरों पर फैंकना शुरू कर दिया और इस प्रकार उनका यह प्रयास निष्फल रहा।

अजीब नज़ारा था इस अनोखी लड़ाई का। कोयलों की बौछाड़ के फलस्वरूप 'जंगी शेर' के टूटते शीशे गोरा पुलिस को घायल करने लग गये और गोरे भगदड़ में इधर–उधर भागने लगे। परिणामस्वरुप जब 'समुद्री शेर' एक ओर को पलट गया तो गोरों ने चीखें मारनी शुरु कर दीं और उनका बांधा हुआ रस्सा उनकी ही जान लेने का कारण बनने लगा। कामागाटामारू के यात्रियों ने रस्सा काट दिया।

रस्सा काटने की देर थी कि हथियारबंद गोरे बम रूपी कोयलों से बचने के लिए भाग खड़े हुए और साथ की अपना "जंगी शेर" भी भाग कर ले गये। भागते हुए "जंगी शेर' को देख कर कामागाटामारू सति श्री अकाल के जयकारों से गूंज उठा। यात्रियों ने अकाल पुरख का धन्यवाद किया और बाबा गुरदित्त सिंघ जी को कैबिन में से बाहर निकाला और सारे हालात से अवगत करवाया।

ज़ख्मों को मरहम पट्टी की गयी और बाबा जी की सलाह, ले कर आने वाले खतरे के लिए तैयारी आरंभ कर दी। वे जानते थे कि "जंगी शेरे" का मार खा कर जाना और भी बड़े खतरे का कारण बनेगा। उन्होंने आज के अनुभव से लाभ उठा कर नये सिरे से मोर्चाबंदी शुरू कर दी।

कोयले का बहुत बड़ा ढेर डेक पर लगा दिया गया, जहाज के अन्दर लकड़ी के मोर्चे बनाये गये। लोहार मुसाफिरों ने लोहा कूट–कूट कर तलवारें तथा भाले बना दिये। लाल मिर्चो को पीस कर बांसों में भर कर, पिचकारियां तैयार कर लीं। और मिट्टी के तेल की बोतलों को भर कर आग लगाने का तरीका भी सोच लिया।

सारे यात्रियों ने एक स्वर हो कर बाबा जी को कहा, "हम वापिस जाते हुए रास्ते में भूख के दुःख से मरने की अपेक्षा यहीं लड़ कर मरना पसंद करते हैं।" बाबा जी ने यात्रियों की हिम्मत की दाद दी और उनको आने वाले संघर्ष के लिए उत्साह दिया।

उधर हथियारबंद गोरा पुलिस को हित्थे मुसाफिरों के हाथों हार जाने पर बेहद शर्म आयी। सारी दुनिया में, अखबारों द्वारा यह खबर जंगली आग की तरह फैल गयी कि भूखे प्यासे भारतीय यात्रियों ने हथियार बंद कैनेडा पुलिस को कोयले मार–मार कर भाग दिया। इमीग्रेशन विभाग के अधिकारियों ने कनेडा सरकार को फौजी कारवाई करने के लिए विनय की।

दो दिन के अंदर ही हजारों की संख्या में गोरे फौजी वैन्कूवर की बंदरगाह पर आ एकत्र हुए। देखते देखते वैन्कूवर बंदरगाह एक फौजी छावनी का रूप धारण कर गयी। फौजी कवायदें होने लगीं, फौजी बैंड गूंजने लगे तथा जंगी तोपें कामा–गाटामारू की ओर मुंह करके आग बरसाने की तैयारी करने लगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उधर कैनेडियन भारतीयों द्वारा बनायी गयी डिफेंस कमेटी और कामागाटामारू के यात्रियों में बातचीत का केवल एकाएक साधन रह गया था और वह था शीशे की झंडी के द्वारा सिगनलिंग का। यात्रियों में से मुंशी मीर मुहम्मद यह काम एक निपुण सिगनलर की तरह निभा रहा था। कैनेडियन भारतीयों ने वैन्कूवर के गुरद्वारे में दीवान सजाया। एक शूरवीर सिंघ उठ कर कहने लगा –

"यदि हम इस विपत्ति के समय अपने भारतीय भाईयों की मदद नहीं कर सकते तो कम से कम उनके साथ किये जा रहे अत्याचार का बदला तो ले ही सकते हैं।"

अंत में फैसला हुआ कि यदि कैनेडा सरकार कामागाटामारू के निहत्थे यात्रियों को तोपों के गोलों से उड़ाने जैसा नीच तथा घृणित काम करने पर उतर आये तो हमें भी चाहिए कि हम वैन्कूवर शहर को आग लगा कर उसी समय फूँक दें। जिस समय पहला गोला कामागाटामारू पर दागा जाये उसी समय, एकदम सारा वैन्कूवर आग की लपटों में लपेटा हुआ नज़र आये।

कैनेडियन भारतीयों का यह फैसला सिगनलिंग द्वार मुंशी मीर मुहम्मद को पहुँचा तो उसने बहुत उत्साह की भावना में यात्रियों को इस बारे में जानकारी दी।

कैनेडियन भारतीयों का दलेरी भरा फैसला सुनकर बाबा गुरदित्त सिंघ सहित सभी मुसाफिरों की आँखों में खुशी के आंसू उतर आये।

उधर 29.7.1914 को प्रातः ही रैनबो नामक एक जंगी जहाज वैन्कूवर की खाड़ी में आ खड़ा हुआ। जहाज़ की जंगी तोपों में मुह कामागाटामारू की ओर कर दिये गये। जहाज़ के फौजी अफसर ने बाबा गुरदित्त सिंघ जी को चेतावनी भेजी कि –

"दो घंटो के अंदर – अंदर हमारी बंदरगाह की सीमा से बाहर हो जाओ नहीं तो तुम सब को तोप के गोलों से भून दिया जायेगा।" आगे से बाबा जी ने उत्तर भेजा –

(क) हम भूखे प्यासे यहां से चलने को तैयार नहीं हैं।

(ख) यदि कैनेडा सरकार वापसी के सफर के लिए राशन पानी का प्रबंध कर दे तो हम आज ही जाने को तैयार हैं।

(ग) रास्ते में भूख से मरने से हम यहीं पर तोपों के आगे छातियाँ तान कर मर जाना अधिक पंसद करेंगे।

(घ) हम उन शूरवीर सिंघों की संतान हैं जो मौत से नहीं डरते। हम अभी ही मरने के लिए तैयार हैं। तुम्हें दो घंटे भी इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं।

इसके पश्चात् मुसाफिर विधाता की इन्तज़ार करने लग गये और साथ ही साथ अंतिम संघर्ष के लिए तैयारी करने लग गये।

ग्रंथी सिंघ ने अरदास की। सभी मुसाफिर एक मन, एक चित्त होकर अरदास में जड़े और गुरु महाराज से चढ़ती काल की मांग की।

अब सभी मुसाफिर शहीदियाँ पाने को तैयार हो गए। सभी ने अपनी ड्यूटी संभाली । योजना इस प्रकार बनाई गई।

जब कोई जहाज़ समीप आये तो पहली टोली डेक से शत्रु पर कोयलों की वर्षा करे और जब यह टोली शहीदी प्राप्त कर ले तो दूसरी टोली डेक से कोयलों की बौछाड़ करने का काम संभाल ले।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यदि शत्रु जहाज़ में आ घुसे तो तलवारों और बरछों से टाकरा किया जाए। लाल मिर्चो का पाऊडर पिचकारियों के द्वारा उनकी आँखों में फैका जाये। अंत में कोयलों के ढेर को मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी जाये और इस प्रकार गोरों का कैनेडा के दरवाज़े पर ही अपना कब्र स्थान बना दिया जाये जिसकी लपटें ब्रिटेन साम्राज्य को जला कर राख करने तक जलती रहें और जिनमें से पंजाबी शूरवीरों की कुर्बानी और देश – प्यार सदा बरसता रहे।

उधर मुसाफिरों और डिफेंस कमेटी के बीच सिगनलिंग द्वारा एक दूसरे को विदायगी के अंतिम संदेश देने प्रारंभ हो गये और दोनों ओर से मरने और बदला लेने के फैसलों से एक दूसरे को अवगत करवाया गया।

कैनेडा सरकार को खुफिया महकमे द्वारा भारतीय शूरवीरों, कैनेडियन भारतीयों और कामागाटामारू के बीच भारतीय यात्रियों के अंतिम फैसलों की जब सूचना लगी तो उनकी अक्ल ठिकाने आ गई। उन्होंने सोचा कि इन 360 यात्रियों (जिनमें में 90 – 95 प्रतिशत गुरू गोबिन्द सिंघ के शेर सपूत, भाव सिंघ है) को मारकर मिटाना बहुत महंगा पड़ेगा।

कैनेडियन हाकिमों ने उसी समय जंगी जहाज को वापिस बुला लिया और समझौते की बातचीत की। अंत में कैनेडा सरकार को बाबा जी द्वारा की गयी मांगों के सामने झुकना पड़ा और उसने यात्रियों को वैन्कूवर से हांगकांग तक के लिए राशन – पानी देना मान लिया । यह भी मान लिया गया कि कैनेडियन भारतीयों द्वारा बनायी गयी डिफेंस कमेटी के मैंबर कामागाटामारू जहाज़ में आ कर यात्रियों के साथ परामर्श भी कर सकते हैं।

इस प्रकार दो मास के लंबे समय के पश्चात् पहली बार कामागाटामारू जहाज़ में भारतीय यात्रियों के साथ कैनेडियन भारतीयों का मिलाप बहुत करूणामयी वातावरण में हुआ । छः दिन भूखे प्यासे यात्रियों को कैनेडियन भारतीयों ने खूब भोजन पानी की सेवा की।

अति की मुसीबत के समय भारतीय मुसाफिरों ने जो फौलादी इरादा तथा संयम दिखलाया और कैनेडा वासी भारतीयों ने देशवासियों के खून का बदला लेने के लिए जो कुर्बानी की भावना दिखलाई, यह जीत उसी कारण संभव हुई।

अब और झगड़े में पड़ना व्यर्थ था। कामागाटामारू की इस घटना ने अंग्रेज़ी न्याय तथा लोकतन्त्र का दीवाला निकाल दिया था भारतीय यात्रियों के दिलों में भारत वापिस आ कर, अंग्रेज़ों को देश में से बाहर निकाल देने का इरादा दृढ़ हो चुका था। रास्ते के लिए राशन पानी मिल चुकने के पश्चात् 23 – 7 – 1914 का कामा – गाटामारू जहाज़ ने वैन्कूवर बंदरगाह से लंगर उठा कर वापसी की यात्रा आरम्भ कर दी। दूर तक दोनों ओर दो जंगी जहाज़ इसके साथ रहे और कैनेडा की सीमा पार करने के पश्चात् वापिस आ गये।

कैनेडा से कामागाटामारू को कलकत्ता की रवानगी पत्र मिला। कौबे से योकोहामा होता हुआ जब जहाज़ हांगकांग पहुँचा तो इस को किनारे लगाने की स्वीकृति नहीं दी गयी और आगे चला दिया गया। सिंगापुर बंदरगाह पर पहुँचने पर जहाज़ पर सख्त पहरा लगा दिया गया और किसी यात्री को गोरे हकूमत के अहलकारों ने नीचे न उतरने दिया।

अन्त में जहाज़ पिनांग होता हुआ बंगाल की खाड़ी में पहुँचा। 6 मास की कष्टदायी समुद्री यात्रा के पश्चात् अपना देश समीप आया जान कर, भारतीय यात्रियों के दिलों की मुरझाई हुई कलियाँ खिल उठीं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिनांक 27.9.1914 को कामागाटामारू हुगली नदी में दाखिल हुआ पर सौदा बेचने आ रहीं किश्तियों को, पहरेदारों ने जहाज़ के समीप न आने दिया।

एक अग्निबोट कामागाटामारू नज़दीक आया। इस में से निकला लाहौर का डिप्टी कमिश्नर, कुछ अन्य अंग्रेज अधिकारी और 20 के करीब साधारण कपड़ों में पंजाबी, जिनमें एक प्रसिद्ध बदनाम पुलिस अधिकारी सुखा सिंघ भी था। मुसाफिर सिखों ने उसे भाई समझ कर फतेह बुलाई तो उसने आगे से माथे पर तेवर डाल दिये।

यात्रियों की तलाशी ली गयी, कैबिनों को ताले लगा दिये गये। तीन दिन तक तलाशी होती रही और बाद में जहाज़ को कलकत्ता की ओर मोड़ दिया गया।

कलकत्ता से 17 मील पहले ही बजबज के घाट पर जहाज़ खड़ा कर दिया गया। बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने पुलिस अफसर से पूछा," आप क्या चाहते हो?" हमको साफ – साफ क्यों नहीं बताते?" आगे से उत्तर मिला, सरकारी हुक्म के अनुसार आपको यहीं से रेल पर अपने – अपने घर पंजाब, भेजा जायेगा। बाबा जी और पुलिस अधिकारी के बीच कुछ इस प्रकार वार्तालाप हुआ।

बाबा जी – मैं व्यापारी हूँ। कलकत्ता जा कर जहाज़ खरीदना है। मैंने जहाज़ी कंपनी बनायी हुई हैं। जापानी कंपनी के साथ कामागाटामारू जहाज़ का हिसाब – किताब करना है। मुसाफिरों के साथ लंबा हिसाब – किताब है। कई मुसाफिर घर घाट बेचकर आये हैं, उनको कलकत्ता में ही रोज़गार ढूँढना है। अब हम अपने देश में हैं। यदि हम मुजरिम हैं तो वांरट दिखला कर गिरफ्तार कर लिया जाये। यदि नहीं तो हम कलकत्ता जाना चाहेंगे।

गोरा पुलिस अधिकारी – मेरी ड्यूटी तो तुम्हें जहाज़ों से उतार कर गाड़ी में चढ़ाने की है। मैं और कुछ नहीं जानता।

29.9.1914 ई. कामागाटामारु समुद्री ज़हाज जब बज – बज घाट पर पहुंचा तो उन निर्दोष यात्रियों अंग्रेजों ने गोलियां चलाकर उनकी समुहक हत्या कर दी गई।

थोड़ी देर बाद एक गोरा अफसर जहाज़ पर आया और कड़क कर हुकम देने लगा "15 मिनट में मुसाफिर जहाज़ में से नीचे उतर जायें, जहाज़ वापिस जा रहा हैं।" कुछ मुसाफिर उतरे थे, कुछ अभी तैयारी में ही थे कि कामागाटामारू ने स्टीम छोड़ी और पीछे की ओर चल दिया। यात्री, सामान जहाज़ में ही छोड़ कर जल्दी – जल्दी नीचे उतर आये।

कुछ यात्री गाड़ी पर चढ़ बैठे और बाकी अभी प्लेटफार्म पर ही खड़े थे। उन को यह भी सन्देह हो गया कि गाड़ी की यह लाइन तो पंजाब को नहीं जाती।

बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने फिर पुलिस अधिकारियों से प्यार से पूछा कि हमारे साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों किया जा रहा है? हम कोई गुनहगार तो नहीं हैं। हमको गाड़ी पर चढ़ने के लिए तो मजबूर न करो और हमारे खर्चे पर कलकत्ता से वकील मंगवा दो। आगे से अंग्रेज़ पुलिस अधिकारी ने कड़क कर उत्तर दिया:

"मैं सरकार का हुक्म तुम्हें मनवाये आया हूँ। तेरे हुक्मों की तामील करने नहीं आया।"

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाबा जी – “अच्छा फिर कम से कम 5 सिंघों को आज्ञा दो कि वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सवारी हावड़ा के गुरुद्वारे में पहुँचा आयें। फिर हम गाड़ी में बैठ जायेंगे।”

बाबा जी की इस बात की भी पुलिस अधिकारी ने सुनने से इन्कार कर दिया।

बाबा जी ने यात्रियो के अग्रणियों के साथ कुछ बातचीत की और बाद में पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा – “हमें एक घंटे के अंदर गिरफ्तारी के वारंट दिखला दो (यदि नहीं है तो मंगवा लो) नहीं तो हम रेल गाड़ी में नहीं बैठेंगे।

डेढ़ घंटा वारंट की इंतज़ार करने के पश्चात् यात्री एक जलूस की शक्ल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अगवाई में, कलकत्ता को चल पड़े। आगे से आ कर एक गोरे अफसर ने रास्ता रोक लिया। दो मुसाफिरों, सरदार इंद्र सिंघ तथा सरदार अमर सिंघ ने छातियां तान कर पुलसिये के पिस्तौल के आगे होते हुए ललकार कर कहा, “चला दे गोली, हम मरने को तैयार हैं।’ गोरा पिस्तौल बंद करके एक ओर हो गया और जलूस आगे को चल पड़ा।

कलकत्ता से 17 मील इधर ही, आगे से एक पुलिस की मोटर आ मिली। एक गोरे पुलिस अधिकारी ने मोटर से नीचे उतर कर बाबा गुरदित्त सिंघ के साथ बहुत प्यार से बातचीत की और कहा, “मुझे गर्वनर साहिब ने तुम्हारी शिकायतें सुनने के लिए भेजा है। वापिस बज – बज के घाट पर चले चलो। वहीं पर तुम्हारी बातचीत सुनकर, मुनासिब कारवाई की जायेगी। गोरे अफसर के इकरार पर जलूस वापिस बज – बज के घाट की ओर चल दिया। पुलिस अधिकारी की मिठास, चापलूसी सिद्ध होने लगी। वापसी यात्रा में पुलिसयों का व्यवहार और भी रूखा हो गया। किसी को ठुड्डा मारते किसी को डंडा और किसी को भद्दे शब्दों द्वारा अपमानित करते । ऐसा लगता था जैसे यात्रियों को भड़का कर गोली चलाने के लिए बहाना ढूँढते हों। यात्री थक – हार कर भूखे पेट जब वापिस बज – बज के घाट पहुँचे तो पुलिस अधिकारी की ओर से हुक्म हुआ।

“सभी यात्री वापिस कामागाटामारू जहाज़ पर चढ़ जायें।”

यात्रियों ने यह आदेश मानने से इन्कार कर दिया,क्योंकि उनको सन्देह हो गया था कि कहीं हमें जहाज़ सहित डुबो देने की योजना न बनाई गई हो।

सायंकाल का समय हो गया। यात्रियों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में दीवान की शक्ल में रहिरास साहिब का पाठ किया। अरदास हो रही थी कि पुलिस अफसर ऊँची आवाज़ में मुसाफिरों को बैठने का हुक्म सुनाने लगे। मुसाफिर अब गाड़ी में तो बैठने को तैयार थे, पर जहाज़ में नहीं। उधर पुलिस वाले कह रहे थे, जहाह में चढ़ो नहीं तो गोलियों से उड़ा दिया जायेगा।

बाबा जी के सात वर्ष के बच्चे को एक सिपाही घसीट कर ले गया। बच्चे ने चीखें मारीं और बाबा जी को आवाजें मारता रहा। बाबा जी ने कहा, “बेटा आता हूँ”।

इतने में पुलिस अफसर ईस्टवुड बाबा जी को गिरफ्तार करने के लिए आगे की ओर बढ़ा। मुसाफिरों ने पुलिस अफसर का रास्ता रोक लिया। बात बढ़ती गयी।

ईस्टवुड ने पिस्तौल निकाल कर दो गोलियां दाग दीं। एक गोली सरदार हरनाम सिंघ को पगड़ी में से निकल गयी और दूसरी से सरदार ठाकुर सिंघ उचोनंगल घायल हो गया। मुसाफिरों में से किसी ने ईस्टवुड को मार – पीट कर दी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ईस्टवुड के गिरने की ही देर थी कि पुलिसियों ने गोलियों की वर्षा आरंभ कर दी। रात के अंधकार में ऐसी भगदड़ मची कि जिधर किसी यात्री का मुह आया वह उधर को भाग उठा। लगभग 40 यात्री वहीं पर शहीदियां प्राप्त कर गये। पकड़े गये मुसाफिरों को कड़े कष्ट दिये गये। एक व्यक्ति सरदार मंगल सिंघ को ज़ंजीरों से बांध कर प्लेटफार्म पर लैंप के खंभे से लटका दिया गया। सारी रात जीवन तथा मृत्यु के बीच ये सिंघ, संघर्ष करता रहा। फिर उल्टा लटका कर बेंत मारने आरम्भ कर दिये गये और उसका सिर खम्भे से टकरा-टकरा कर घायल हो गया। घायल सिपाहियों को तुरंत संभाल लिया गया पर घायल यात्रियों को नहीं संभाला गया ओर वे दम तोड़ते गये।

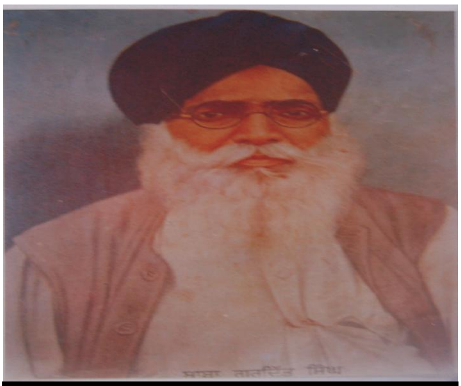

कामागाटामारू ज़हाज के नायक बाबा गुरदित सिंघ जी

गोलियों की बौछार में दो यात्री बाबा गुरदित्त सिंघ जी को घसीट कर एक ओर भाग उठे और बाबा जी का सात साल का पुत्र बलवंत सिंघ पुलिस के हाथ ही रह गया। सारी रात बाबा जी ने दोनों साथियों सहित एक पानी के जौहड़ में काटी। जोंके रात को चिपट जाती और वे उन्हें तोड़-तोड़ कर परे फैंकते।

प्रातः 6 बजे के करीब दोनों साथियों को सोया हुआ छोड़ कर बाबा जी रात की खूनी घटना वाली जगह पर गये। आगे से दो सिपाही टांगे में सिर दे कर ऊँघते हुए नज़र आये। मन किया कि इनसे बंदूक छीन लें और दोनों को मार दें। पर ऐसा करने से सारे पुलिसियों के एकत्र हो जाने का भय था। प्लेटफार्म पर पहरा दे रहे सिपाहियों के अतिरिक्त उन्हें वहां कोई दिखलाई नहीं दिया।

7 वर्ष का अज्ञात-वास

बाबा जी ने सोचा दिन निकलने और पुलिस की गोली का शिकार होने से पूर्व ही क्यों ने किसी बंगाली ग्रामीण द्वार इस खूनी घटना की खबर बंगाल के लीडरों तक कलकत्ता पहुँचायी जाये।

यह सोचकर बाबा जी एक बस्ती की ओर चल दिये। बस्ती में पहुँच कर कई अनुनय-विनय व मिन्नतें करने के पश्चात् और धन का लालच देने के बावजूद कोई भी बंगाली ऐसा नहीं मिला जो तो बाबा जी की मुलाकात किसी बंगाली लीडर से करवा दे या उनकी दुःख भरी कहानी ही किसी बंगाली नेता को जा सुनाये। हां एक मेहरबान बंगाली ने बंगाली पहरावे का प्रबंध अवश्य कर दिया।

बंगाली पहरावे में (कमर में धोती तथा सिर पर रूमाल पहने) बाबा जी ने दिन चढ़ने से पूर्व ही अन्य बंगाली लोगों के साथ किश्ती द्वारा नदी को पार कर लिया। दोपहर का समय एक गाँव से बाहर व्यतीत किया और लालच देकर खाने-पीने का प्रबंध भी कर लिया।

बाबा जी ने बजबज घाट के स्टेशन से काफी दूर बोरिया नामक रेलवे स्टेशन से जगन्नाथपुरी की टिकट ली और रेलगाड़ी में सवार हो गए । पुरी से एक स्टेशन पहले ही गाड़ी में से उतर खड़े हुए और पैदल चल कर पुरी जा पहुँचे। दो दिन पुरी ठहरने के पश्चात् यहां पर भी खतरे का आभास पा कर वापिस आये और उसी स्टेशन से फिर गाड़ी पकड़ी जहां पहले उतरे थे। खुदरा रोड जंक्शन से गाड़ी बदली और गोदावरी का रुख लिया। मुँह सिर लपेट कर गाड़ी के ऊपर के फट्टे पर चढ़ कर सो गये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गाड़ी चली तो दो हष्ट – पुष्ट व्यक्ति सामने वाली सीट पर आ बैठे।

ये दोनों व्यक्ति सी. आई. डी. के थे। उनमें इस प्रकार बातचीत आरम्भ हुई –

"तो तोतिया! वह फोटो तेरे पास है या इंस्पेक्टर के पास है? दूसरे ने जेब में से एक फोटो निकाली और कहने लगा, यह फोटो जापान में बनी है, हमारे यहाँ इतनी अच्छी फोटो नहीं बनती।"

पहला – हरेक सिख की दाढ़ी तो ऐसे ही हुआ करती है। क्या कोई और खास बात है इस फोटो में, जो गुरदित्त सिंघ के पहचानने में हमारी मदद करे।

दूसरा – अरे यह कोई बड़ी बात है? जब कोई सिख हमें मिलेगा तो हम यह फोटो निकालकर उसकी शक्ल से मिला लेंगे।

पहला – तूने इंस्पेक्टर साहिब का हुक्म तो सुना ही होगा।

बाबा जी ने सोचा कि और थोड़ी देर बाद मैं पुलिस की हिरासत में होऊँगा। पकड़ पर जेल में बंद कर देंगे या गोली मार देंगे। कोई पूछताछ होने की नहीं।

जिस काम के लिए बजबज घाट से से भागा था वह भी अभी पूरा नही हुआ। (भाव किसी हिन्दुस्तानी लीडर तक बजबज घाट के शहीदी कांड की खबर नहीं पहुँचा सका।) बाबा जी ने आह भरी और अचानक मुँह से वाहिगुरु शब्द निकल गया। वाहिगुरु शब्द कानों में पड़ते ही सी. आई. डी. वाले पुलिसियों की बातीचीत की कड़ी टूट गई और वे आपस में घुसर – मुसर करने लग गए। अब उनकी बातों को प्रयत्न करने पर भी बाबा जी न सुन सके।

इतने में एक स्टेशन आया। "यह डिब्बा रिज़र्व है" कह कर उन पुलिसियों ने किसी और मुसाफिर को डिब्बे में चढ़ने नहीं दिया। यही कुछ वह हर स्टेशन पर करते। उनमें से एक पुलिसिया नीचे उतरता और थोड़ी देर बाद वापिस आकर दूसरे के साथ घुसर मुसर करता।

रात के साढ़े तीन बजे वजीगापट्टम स्टेशन आया। गाड़ी चलने लगी तो दस बारह और बावर्दी पुलिस वाले बाबा जी वाले डिब्बे में आ चढ़े और अपना – अपना सामान संभालने में जुट गए।

सी. आई. डी वाले दो पुलिसियों में से एक (तोतीया) जो नीचे उतरा था, अभी वापिस नहीं आया था। उसके डिब्बे में बैठे साथी का ध्यान भी नए पुलिसियों की ओर बंट गया।

बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने सोचा एक मिनट में कुछ करना चाहिए। या तो बच जाऊँगा या फिर हमेशा के लिए कैदी बना लिया जाऊँगा।

बाबा जी ने अवसर को ताड़ा । धड़ाम करके फट्टे से नीचे छलांग लगाई और दूसरे ही पल चलती गाड़ी के दरवाजे से बारह जा कूदे।

पीछे डिब्बे में शोर मच गया, पर जितने समय में गाड़ी रुकी इतने समय में बाबा जी गाड़ी से डेढ़ मील दूर खड़े थे। गिरने से टांगों पर कुछ खरोंचों के निशान आ गये पर संभल कर तुरंत ही बाबा जी उठ कर खेतों की ओर चल दिए। रेल में सफर करने का ख्याल छोड़ दिया। बल्कि सड़क से भी दूर ही रहते । दिन में किसी एकांत में आराम करते और रात को सड़क से मील एक हटकर सड़क के समांतर पैदल यात्रा करते। अवसर ताड़ कर रास्ते के किसी गाँव या शहर में से पानी का प्रबंध कर लिया करते

एक बार ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से आगे जाने के लिए बड़ी सड़क के सिवाय और कोई रास्ता ही नहीं था। रात के दो बज चुके थे और सामने दहाड़ती हुई नदी थी। पुल पर पुलिस का पहरा था। बाबा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जी एक पेड़ की नीचे बैठ कर योजना बनाने लगे। इतने में कुछ बैलगाड़ियां सड़क से पुल की ओर बढ़ती हुई नज़र आई। गाड़ीवान ऊँघ रहे थे और बैल अपनी चाल चल रहे थे।

बाबा जी धीरे – धीरे आगे बढ़े और बीच के छकड़े के नीचे जा घुसे। दोनों हाथ धरती पर लगा कर, टांगों के बल पर कर छकड़े के नीचे घिसटते रह गये। पुल के पार होते समय, पहरे पर खड़े संतरी ने ऊँची आवाज़ में पूछा –

"तुम्हारी गाड़ियों में कोई पंजाबी तो नहीं है" आगे से उत्तर में "नाको, नाको" कहते हुए गाड़ीवान पुल पार कर गये। पुल से पार जाकर बाबा जी तुरन्त छकड़े के नीचे से निकल कर अपनी राह पर हो लिए।

यहाँ से चल कर बाबा जी भद्राचल के समीप नेड़पुर गांव में जा पहुँचे। यहाँ पर दक्षिण सिखों के कुछ घर बसते थे। इनके पूर्वजों में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंघ की दक्षिणी की यात्रा के समय अमृतपान करके सिखी धारण की थी।

बाबा जी एक सिंघ, सरदार बघेल सिंघ के घर पहुँचे। बघेल सिंघ ने अपने कारोबार के लिए छकड़ा बनाया हुआ था। एक परदेशी गुरसिख को घर आया देख कर परिवार के लोगों को चाव चढ़ आया। बहुत दिनों के पश्चात् आज बाबा जी की भरपेट खाना नसीब हुआ, घर आनंद प्राप्त हुआ और गहरी नींद सोये। कुछ दिन यहीं टिक कर बाबा जी 'मंगावत' सरदार हरी सिंघ के पास जा पहुँचे। दिन में गोदावरी के किनारे सैर करते, अन्न – पानी सेवन करके वाहिगुरु जी की याद में जुड़ जाते।

मंगलपुर से चले तो बाबा जी का मेल एक सरदार निहाल सिंघ के साथ हो गया। यह नौजवान पुलिस में सिपाही था। उसके साथ बाबा जी की निकटता बढ़ गयी जिसके फलस्वरूप सरदार निहाल सिंघ ने नौकरी छोड़ दी और बाबा जी के साथ रहने लग गया। उसको खर्चा दे कर गुरदित्त सिंघ जी ने पंजाब भेजा और उसके द्वारा अपने घर का हाल – चाल तथा पंजाब के राजसी हालात के बारे में जानकारी प्राप्त की। वापिस आते हुए सरदार निहाल सिंघ कुछ पुरानी अखबारों को भी ले आया जिनको पढ़ कर बाबा जी को पिछले कुछ महीनों में देश में हुई घटनाओं का पता चला।

ईश्वर की करनी ऐसी हुई कि पंजाब से वापिस आकर सरदार निहाल सिंघ का पुलिसियापन जाग उठा और नीयत में अंतर आ गया। उसको पता लगा कि बाबा गुरदित्त सिंघ जी को गिरफ्तार करवाकर ईनाम प्राप्त करने के प्रयत्न करने लगा। बाबा जी उसकी खराब नियत को ताड़ गये और सुर्य उदय होने ने से पूर्व वहाँ से भी चलते बने और होला महले (होलियों) के अवसार पर हजूर साहिब जा पहुँचे।

पंजाब से हजूर साहिब आये यात्रियों के साथ पंजाब जाने वाली गाड़ी में बैठ तो गये पर अभी पंजाब में पैर डालना उचित न समझकर राह में ही उतर गये और रियासत ग्वालियर में घूमने लग गये। "चंदेरी' से हो कर "सिपरी" पहुँचे। वहीं एक ओवरसियर के साथ मिल कर नहर की खुदाई का ठेका लेने लग गये और साथ ही साथ कपड़े का व्यापार भी आंरभ कर दिया और इसी नाम पर पंजाब से अख़बार मंगवाने लग गये।

एक दिन पता लगा कि पुलिस इस इलाके में भी उनकी खोज कर रही है। पैसा – टक्का सब कुछ व्यापार में लगा हुआ था। अब फिर भाग जाने के विचार ने उनकी गहरी सोच में डाल दिया। वे आदम बो, आदम बो करती पुलिस से तंग आ गये थें।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आप मौत से नहीं डरते थे। वे भाई मती दास जी की तरह शहीद होने को तैयार थे। वह देश भक्त शूरवीरों की तरह फांसी के रास्ते को चूमने को तैयार थे पर पुलिस के हाथ नहीं आना चाहते थे। पुलिस जहां कष्ट देती थी, वहीं झूठे दोष भी सिर पर मढ़देती थी। बाबा जी एक दिन पिछले पहर उठकर जंगल की राह पर पड़ गये।

बाबा जी राजगढ़ के ऐसे पिछड़े इलाके में से निकल रहे थे जहां पर किसी परदेशी व्यक्ति को किसी एक घर में से भर – पेट पानी भी नसीब नहीं था होता और पीछे पीछे पुलिस भी बाबा जी की तलाश में आ रही थी।

एक रात को बाबा गुरदित्त सिंघ जी एक कुएं में पानी पी कर रास्ते पर आ रहे थे कि पीछे से किसी की चाल कि भनक लगी। बाबा जी पगडंडी छोड़ कर एक ओर होकर खेतों में से चलने लग गये पर अभी भी उन के पीछे कोई आ रहा प्रतीत होता था। आप दौड़ पड़े। सारी रात आगे आगे बाबा जी और पीछे पुलिस के आदमी। आगे गहरी खड्ड थी। बाब जी खड्ड के बीच में से ही हो चले। खड्ड समाप्त हुई तो उजाड़ आ गयी। कुछ छकड़े वाले रात काटने के लिए यहाँ ठहरे हुए थे। बाबा जी इकट्टे हो कर एक छकड़े के नीचे घुस कर बैठ गये। थोड़ी देर बाद पुलिसिये भी आ पहुँचे। उन्होंने छकड़े वालों से रात के अंधकार में पूछताछ की और आगे निकल गये। बाबा जी छकड़े के नीचे से आहिस्ता से निकले और पुलिस वालों की उल्टी दिशा में चल दिये।

ऐसे ही एक दिन पुलिस के घेरे में फंसे हुए बाबा जी एक पहाड़ी पर जा चढ़े, जिस पर न तो छाया थी और न ही पानी। सोचा आज रातोरात पहाड़ी से नीचे उतर जाना है। यह सब कुछ सोच ही रहे थे कि आगे से दो सिपाही आते दिखाई दिये। थके हुए लगते थे, पुलिस वाले। वह बाबा जी की ओर देख कर आपस में कुछ घुसर – मुसर करने लगे। बाबा जी को एक योजना सूझी।

वह अपने हाथ में ली हुई लाठी पर इस प्रकार झुक गये जैसे कोई बंदूक का निशाना लगा रहा हो। पुलिसिये इस लाठी को बंदूक समझ बैठे और डर के मारे झाड़ियों के बींचो – बीच छिपते – छिपते कहीं के कहीं जा पहुँचे। अब रात होने लगी। बाबा जी रहिरास साहिब का पाठ करते करते पहाड़ी से नीचे उतरने लग गये। पाठ करके, एक जगह पर खड़े हो कर अरदास करने लग गये। अरदास समाप्त होने वाली थी कि नीचे की ओर से कुछ आदमियों की आवाज़ें सुनायी दीं। बाबा जी तुरन्त एक झाड़ी की आड़ में हो गये और लगे कान लगा कर आवाज़ों को सुनने। उनके कानों में ये आवाज़े सुनायी दी:

ऐसी अन्धेरी रात में कैसे नीचे आ सकता है वह।

अरे क्यों नहीं उतरेगा। सुबह उस के पास एक लोटा पानी का ही तो था। बिना पानी मर नहीं जायेगा क्या? तमाम कुओं पर पहरा रखो। कहीं न कहीं तो पानी लेने आयेगा वह। हां रास्तों पर भी पहरा रखो। एक रात हम न भी सोये तो क्या हुआ?

बाबा जी भी इकट्टे हुए इन आवाज़ों को चुपके से सुनते रहे और पुलिसिये बाते करते हुए झाड़ी की ऊपर से हो कर निकल गये।

बाबा जी ने वाहिगुरु का लाख – लाख शुक्र किया। सोचने लगे यदि अरदास के लिए नहीं रुकता तो अब तक पुलिस की पकड़ में आ गया होता । वाहिगुरु कितना बेअंत है। दुखियों एवं निराश्रितों की कैसे आकर बांह पकड़ता है। पुलिस वाले दूर जा चुके थे। बाबा जी पहाड़ियों ने नीचे उतरने लगे। अंधकार में पैर की ठोकर से यदि कोई पत्थर लुढ़क जाता तो बाबा जी और अधिक चौकन्ने हो जाते। इस प्रकार धीरे – धीरे पहाड़ी से नीचे उतरे और कई दिन का सफर करते हुए जयपुर तथा पारवाड़ के इलाके में जा निकले।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बढ़ौदा शहर से बाहर एक गांव में आपने हकीमी का काम शुरू कर लिया और ज़रूरतमंदो को दवा दारू दे कर सेवा करने लग गये। इस क्षेत्र में पुलिस का डर कम था।

इन दिनों में ही जालियां वाले बाग का हत्याकांड हुआ था। सुन कर बाबा जी का दिल कांप उठा। अंग्रेज़ी अत्याचार के शिकार हुए पीड़ितों का दर्द बांटने के लिए उनका हृदय बिलख उठा। पर बाबा जी मजबूर थे। पंजाब में ऐसे समय पर पैर डालना अपने आप को पुलिस के हवाले करने से समान था। उनको भारतीय नेताओं की ढीली नीति पर गुस्सा आता और वे सोचते कि आगे बज-बज के घाट के शहीदों की किसी ने ख़बर नहीं ली और इसी प्रकार अब पंजाब की धरती पर बिखरे इस खून ने ही व्यर्थ चला जाना है। हकीमी छोड़ कर आप बंबई की ओर चल दिये।

बंबई पहुँच कर महात्मा गांधी, पंडित मोती लाल नेहरु तथा अन्य नेताओं को मिले। महात्मा जी तब जलियांवाला बाग फंड एकत्र कर रहे थे। बाबा जी ने जेब में से एक पुराना -सा बटुआ निकाला। अपनी सारी पूँजी (6 रुपये) अपना कोट तथा हाथ की गड़वी फंड में दे दी। बंबई में रहते हुए गुप्त रूप में बाबा जी कांग्रेस की मीटिंगों में शामिल होते रहे, जलसों में लैक्चर देते और राजनैतिक लीडरों के साथ विचार-विमर्श करते रहे।

बाबा जी की गिरफ्तारी

इन्हीं दिनों में ननकाना साहिब का खूनी कांड हुआ। बाबा जी 13.3.1921 को अहमदाबाद में महात्मा गांधी को मिले। ननकाना साहिब के कांड के बारे में अंग्रेज़ों की नीति के बारे में विचार-विमर्श किया। महात्मा गांधी ने उनको अपने आप को पुलिस के हवाले कर देने की सलाह दी। ऐसा करने से पूर्व बाबा जी पंजाब के राजनैतिक हालात का अंदाज़ा लेना चाहते थे।

गुप्त रूप में ही बाबा गुरदित्त सिंघ जी ने हैदराबाद (सिंध), कराची, सखर, मिंटगुमरी, लायलपुर, तथा पंजाब के अन्य कई अलाकों का दौरा किया और हर विचार के नेताओं को मिले। जगह-जगह पर जा कर खिलाफत कमेटियां कायम की और कांग्रेस कमेटियो में लैक्चर देते रहे । अंत में 15.11.1921 को ननकाना साहिब के मेले के समय अपने आपको पुलिस के हवाले करने का ऐलान कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी के जन्म दिन के एक दिन पूर्व आप ननकाना साहिब के जंगलों में जा पहुँचे सरदार दलजीत सिंघ (जिसने हांग कांग में बाबा जी से प्रभावित होकर अमरीका जाकर ऊँची विद्या पाने का इरादा बदल दिया था) बाबा जी के साथ था। रात दोनों ने खेतों में गुजारी। सुबह होते ही बाबा जी मैले कुचैले कपड़े डालकर हाथ में टोकरी व झाड़ू पकड़े हुए भगी का वेश धारण करके पुलिस के पहरे से बच कर निकल गये। जल्दी ही बाद में सरदार दलजीत सिंघ बाबा जी के बाबा कपड़े लेकर पहुँच गया। जी ने कपड़े बदले और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में सजे दीवान में जा बैठे।

9 बजे गुरबाणी के मनोहर कीर्तन के पश्चात लैक्चरों का सिलसिला शुरू हुआ तो स्टेज सैक्रेट्री सरदार हरचंद सिंघ लायलपुरी ने बाबा जी को स्टेज पर आने को कहा। बाबा जी ने खूब संगत के दर्शन किए और 7 वर्ष के लंबे समय में अपने साथ तथा उनके साथियों के साथ हुई घटनाओं के सारे हालात उन्होंने संगत को सुनाए।

शाम को ननकाना साहिब के गुरुद्वारे से ज़ोरदार जलूस पुलिस के तंबुओं की ओर चला। बीच में हारों में लदे हुए बाबा गुरदित्त सिंघ जी थे। पुलिस के तंबुओं के पास एक ऊँची जगह पर पहुँच कर बाबा जी ने संगत को गर्ज कर फतेह बुलाई और संगत से विदाई लेकर अपने आप को गिरफ्तारी के

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

लिए पेश कर दिया। पुलिस ने तुंरत एक स्पैशल गाड़ी द्वारा बाबा जी को लाहौर भेज दिया और बाद में डेरा गाज़ी खान जेल में बंद कर दिया।

रिहाई और फिर गिरफ्तारी

भारतीय रक्षा कानून की अवधि समाप्त होने पर 26–2–1922 को बाबा जी को रिहा कर दिया गया। 6–3 –1922 को श्री अमृतसर साहिब में बाबा जी का एक बड़ा जलूस भी निकाला गया। उन्होंने जगह जगह पर जोशीले भाषण दिए जिसके फलस्वरूप अगले ही दिन उनको गिरफ्तार कर लिया गया।

मुकद्दमा चला और बाबा जी को 5 साल की सज़ा हो गई। जेल में से रिहा होकर बाबा जी कलकत्ता गये और कामागाटामारू जहाज़ के हरजाने का सरकार पर दावा कर दिया। हकूमत के पिट्ठुओं ने चार तारीखों में ही मुकद्दमा खारिज़ कर दिया।

और कोई सेवा !

बाद में भी कई बार बाबा जी को जेल की यात्रा करनी पड़ी। नवम्बर 1953 में देश की आज़ादी होने के पश्चात् दिल्ली में आप मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा पं. जवाहर लाल नेहरू को मिले। पं. नेहरू को संबोधित करते हुए बाबा जी ने कहा, "मुझे कोई सेवादो।" 95 वर्षीय वृद्ध सरदार गुरदित्त सिंघ के मुँह से यह शब्द सुनकर पंडित जी को बहुत खुशी हुई और मुस्करा कर उत्तर दिया, "बाबा जी, आप काम होता हुआ देखें। अपने बच्चों को आशीर्वाद दें। उस परमात्मा का शुक्र करें जिसने आपको, आपकी कुर्बानियों का फल (आज़ादी) अपनी आँखों से देखने का मौका दिया है।"

कलकत्ते में बाबा जी की सेहत खराब हो गई तो आपको पंजाब ले आया गया। दिनांक 24 जुलाई 1954 की शाम के पौने सात बजे लगभग 96 वर्ष के आयु में बाबा गुरदित्त सिंघ जी अपना नश्वर शरीर त्याग गए।

25 जुलाई, 1954 को उनकी अर्थी का जलूस अमृतसर के बड़े–बड़े बाज़ारों में से होता हुआ शहीदों की धरती, जलियाँवाला बाग पहुँचा। बाद में बस द्वारा सरहाली ले जाकर बहुत धूमधाम के उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उनका संघर्ष व त्याग स्वतंत्रता प्रेमियों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor